शिवा की मुसीबत

एक बाल मजदूर की कहानी

इकरा प्रकाशन

FOR PRIVATE CIRCULATION

शिवा की मुसीबत

एक बाल मजदूर की कहानी

कहानीः डी आर नागराज

चित्रः आर एल मिथरादिर

सलाहकारः डा बी आर पाटिल

हिंदी अनुवादः अरविन्द गुप्ता

यह कहानी शिवा नाम के लड़के की है. शिवा अपने परिवार के साथ एक गांव में रहता था. उसका परिवार कर्ज में डूबा था. कर्ज के कारण शिवा को स्कूल छोड़कर कोई काम ढूंढना पड़ा. परिवार गरीबी के चक्र में फंसा था. गरीबी की वजह से कर्ज लेना पड़ता था, फिर कर्ज से गरीबी और बढ़ती थी. परिवार हमेशा कर्ज चुकाने की समस्या से जूझता रहता था. और कर्ज तो हमेशा चाहिए ही होता था – जन्म और मृत्यु के समय, त्यौहारों पर, बुआई के समय बीजों के लिए और फिर कटाई के लिए कर्ज. पुरानी पीढ़ी के कर्ज के बोझ पर नए–नए

कर्ज उतारते का एक सबसे सरल तरीका था – छोटे बच्चों से काम करवाना. शिवा भी उसका शिकार बना. उसके नसीब में नेलप्पा के बैलों की देखभाल करना लिखा था.

नेलप्पा गांव का जमींदार था. उसने शिवा के पिता को 500 रूपए उधार दिए. तब से शिवा जमींदार का बंधक मजदूर बन गया. अब कर्ज चुकने तक शिवा को नेलप्पा के बैलों की देखभाल करनी थी.

पर कभी–कभी शिवा काम से बोर हो जाता था. तब शिवा को अपने स्कूल की याद आती थी. उसे लगता कि बैल चराते–चराते कहीं वो खुद एक–दिन बैल न बन जाए!

शिवा एक सामान्य, होशियार लड़का था और उसे अपनी उम्र के अन्य बच्चों के साथ खेलना पसंद था. अक्सर वो बैलों को आम के पेड़ के पास छोड़ कर फिर अपने दोस्तों के साथ खेलता और मस्ती करता.

तुम्हारे बैल भाग गए हैं!

शिवा डर से कांपने लगा. बैल न मिले तो उसकी शामत आ जाएगी! उसे बहुत मार पड़ेगी! फिर शिवा ने अपना सामान उठाया और वो . . .

. . . बैलों को खोजने के लिए दौड़ा.

शिवा, नेलप्पा के घर के सामने से गुजरा.

मैंने वो बैल 3000 रूपयों में खरीदे थे.

शिवा ने नेलप्पा को कहते हुए सुना.

शिवा!
नेलप्पा के साथ शिवा के पिता भी थे.

वो बैल कहां गए? उस दुष्ट से इतना आसान काम तक नहीं होता! मैंने तुम्हें 500 रूपए उधार दिए थे, उनका क्या होगा? तुम उन्हें कब लौटाओगे?
कहीं लड़का और बैल मर तो नहीं गए.

बकवास बंद करो! अगर मुझे बैल वापस नहीं मिले तो मैं उस लड़के को जिंदा जला दूंगा!
फिर शिवा वहां से भागा.

देखो! वो भाग रहा है!
देखो शिवा भाग रहा है!

शिवा के पिता ने एक पत्थर उठाया

और उसकी ओर फेंका
शिवा गिर पड़ा.

तो यह रहा वो कमबख्त!
पिता ने शिवा को पीटा.

तुझे पता नहीं

तूने मुझे किस मुसीबत में डाला है?

बता, अब हम नेलप्पा के 500 रूपए कैसे चुकाएंगे?

अगर तू बैलों तक की देखभाल नहीं कर पाया, फिर भला तू किस काम का?

थक कर चूर होने के कारण वो वहीं सो गया.

जब उसे सब कुछ शांत लगा तो फिर वो चुपके से घर में घुसा.

घर में मां बेहद परेशान थी.

अब तुम यहां नहीं रह सकते. नेलप्पा तुम्हारी तलाश में है.
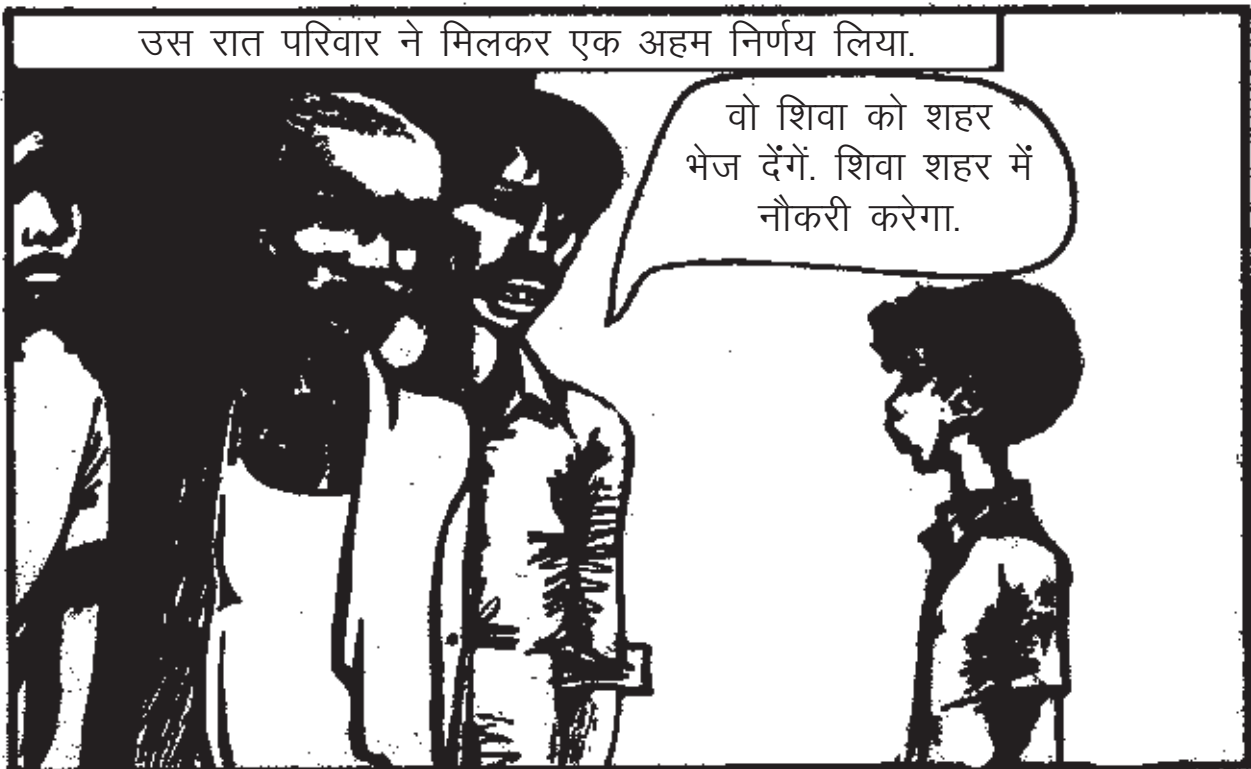
उस रात परिवार ने मिलकर एक अहम निर्णय लिया.
वो शिवा को शहर भेज देंगें. शिवा शहर में नौकरी करेगा.

पांच घंटे बाद वो शहर पहुंचे.

शिवा के चाचा उसे एक छोटे होटल में ले गए.
कृष्णा भवन
आज से तुम यहां काम करोगे.

शिवा ने तुरंत होटल में सफाई का काम शुरू कर दिया.
होटल का मालिक कृष्णा बेहद गुस्सैल आदमी था.

बर्तनों का ढेर मांझते–धोते उसे उल्टी आने लगी.

होटल का किचिन बिल्कुल नर्क जैसा था. वहां धुएं और बदबू को बरदाश्त करना मुश्किल था. शिवा को बहुत भूख लगी थी. फिर भी वो कुछ खा नहीं सका.

शिवा ने घंटों तक, इतनी मेहतन–मशक्क्त का काम पहले कभी नहीं किया था. शाम होते–होते वो थककर चूर हो गया.

अगले दिन सुबह मंहगे कपड़े पहने, एक अजीब शक्ल वाला आदमी, अपने दोस्तों के साथ होटल में आया.

वो होटल में अपनी होने वाली पत्नी से मिलने आया था, इसलिए वो खुश था. वो इतनी जोर से हंस रहा था कि उसके मुंह के छोर कानों को छू रहे थे.

उसके साथी भी खूब हंस रहे थे. शिवा को कुछ समझ नहीं आया. वो भी उनके साथ हंसना चाहता था. अंत में वो खुद को रोक नहीं पाया. फिर वो भी जोर से हंसा. नतीजा? उसके हाथों के सारे बर्तन–प्लेट उस खूबसूरत आदमी पर गिर गए.
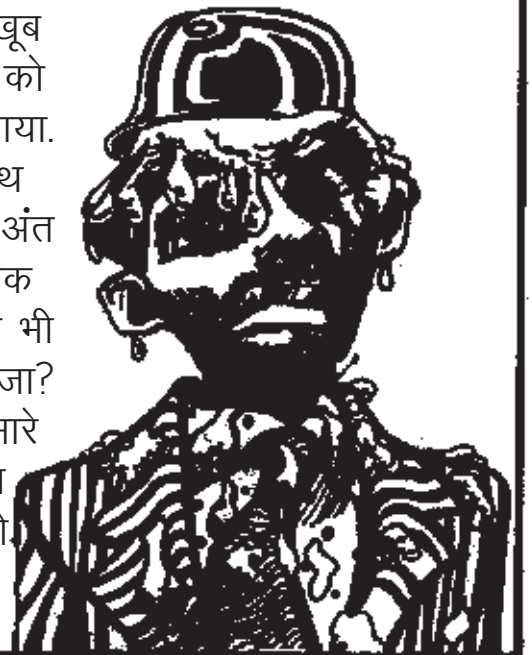
कृष्णा, शिवा को घसीटता हुआ किचिन में ले गया.
झापड़!
कृष्णा अपनी सुधबुध खो बैठा. उसने शिवा को बेरहमी से पीटा.

उस रात शिवा रोया. उसे बहुत अकेलापन महसूस हुआ.

सड़ी बदबू और मच्छरों ने उसे बहुत परेशान किया.

उसने बाहर जाने की कोशिश की
पर कृष्णा ने उसे पकड़ लिया.

देखो, तुम यहां से किसी भी हालत में भाग नहीं सकते. तुम्हारे चाचा ने मुझ से 700 रूपए का कर्ज लिया है.

कृष्णा ने शिवा को अंदर धकेला और फिर दरवाजे में ताला लगा दिया. शिवा जमीन पर लेटा रहा और कृष्णा उसे लगातार गालियां देता रहा. बाकी नौकर कृष्णा के डर के मारे चुपचाप पड़े रहे. सभी नौकर 20 साल से कम उम्र के थे. उनमें से ज्यादातर शिवा की उम्र – यानि 10 साल के थे.

पर उससे कोई छुटकारा भी तो नहीं था.

पर रात को अपन्ना अपना असली रंग दिखाता था. वो जोर–जोर से अखबार पढ़ता था. उससे पहली बार शिवा को बाहर की दुनिया में होने वाली घटनाओं का पता चला. एक दिन अपन्ना ने मेक्सिको में बाल–मजदूरों द्वारा निकाले जलूस की खबर सुनाई.

अपन्ना और शिवा देर रात तक बातें करते.

फिर कुछ और लड़के भी इन चर्चाओं में रूचि लेने लगे और प्रश्न पूछने लगे. एक रात किसी ने एक बहुत महत्वपूर्ण सवाल पूछा.

अपन्ना ने सब लड़कों से इस प्रश्न के बारे में सोचने को कहा.

अपन्ना चुप रहा.

एक दिन होटल के सामने से शिवा को स्कूल जाते कुछ बच्चे दिखाई दिए. उसने उनकी किताबें भी देखीं. फिर उसने खुद की ओर देखा और पूछा. क्या मैं उनकी तरह कभी स्कूल जा सकूंगा? यह सोचकर उसके दिल में एक टीस जैसी उठी.

उस रात शिवा किचिन के फर्श पर ही पड़ा रहा. उसे नींद में एक सपना आया. उसने देखा कि अन्य कामकाजी बच्चों के साथ वो एक जलूस में शामिल था. जलूस में बच्चे अपने हकों की लड़ाई के नारे लगा रहे थे.

बाल–मजदूरी के बारे में कुछ तथ्य

बाल–मजदूरी क्या है?

बाल मजदूर 5 से 14 वर्ष की आयु के बच्चे होते हैं जो किसी लालच या वेतन पर फुल–टाइम या पार्ट–टाइम नौकरी करते हैं. इसमें अपना खुद का धंधा करने वाले, या माता–पिता के साथ रोजाना दो घंटे से ज्यादा काम करने वाले बच्चे भी शामिल हैं.

इंटरनैशनल लेबर औरगनाईजेशन के अनुसार 8–15 उम्र के लगभग 7.5 बच्चे करोड़ नौकरी करते हैं. भारत में ऐसे बाल मजदूरों की संख्या लगभग 1.6 करोड़ है. यह बच्चे माचिस और पटाखा कारखानों, घर निर्माण, होटल, बीड़ी, खेती के अलावा कम–वेतन वाले धंधों में काम करते हैं.

क्या यह कानूनी है?

भारत के संविधान में 14–साल से कम उम्र बच्चों के काम करने पर पाबंदी है. धारा–24 के अनुसार 14–साल से कम उम्र का कोई भी बच्चा किसी कारखाने, खदान या अन्य किसी खतरे के उद्योग में काम नहीं कर सकता है. धारा 39–एफ के अनुसार बच्चों के नैतिक और भौतिक शोषण पर भी पाबंदी है. संविधान के डायरेक्टिव प्रिंसिपिल्स के अनुसार सभी बच्चों का 14 वर्ष तक स्कूल में पढ़ना अनिवार्य है, और उसके लिए राज्य सरकार को व्यवस्था बनाने की जरूरत है. संविधान के इन प्रावधानों को अमल में लाने के लिए भारत सरकार ने बाल–मजदूरी को रोकने के लिए अनेकों कानून बनाएं हैं.

फिर बाल–मजदूरी अभी भी क्यों जिंदा है?

भारत में बाल–मजदूरी के जिंदा रहने का एक अहम कारण है – डिमांड और सप्लाई – यानि मांग और आपूर्ति. गरीबों के परिवार बड़े होते हैं और कमाने वाले कम. साथ में स्कूलों का अभाव, अनपढ़ पड़ोसी, इन सब कारणों से बाल–मजदूरों की सतत सप्लाई जारी रहती है. कम–वेतन या मुफ्त में काम कराने से मालिक को, मजदूरी पर कम खर्च करना पड़ता है. क्योंकि बच्चे आज्ञाकारी होते हैं और बहुत लगन से काम करते हैं इस कारण भी मालिक, बाल–मजदूर पसंद करते हैं. बाल–मजदूरों की समस्या डिमांड–सप्लाई एक दुष्चक्र में फंसी है. इसी वजह से इस समस्या का समाधान बहुत दुश्वार है.

क्या बाल–मजदूरों की सुरक्षा की जा सकती है?

बरसों से बाल–मजदूरी नियमों का मालिकों ने उल्लंघन किया है. गरीबी और शिक्षा के अभाव में बेहतर यही होगा कि पूरी तरह से बाल–मजदूरी पर रोक न लगाई जाए पर उसे अच्छी तरह रेग्युलेट यानि उसका नियमन किया जाए.

क्या इस समस्या का कोई हल है?

सरकार को बाल–मजदूरी को लेकर एक कानून बनाना चाहिए – जिससे बाल–मजदूरों के वेतन और काम के घंटों का नियमन हो. कानून में नौकरी कर रहे बच्चों के लिए आगे की शिक्षा और ट्रेनिंग का भी प्रावधान हो, जिससे बच्चे आगे चलकर कोई बेहतर नौकरी पा सकें. इसके लिए बाल–मजदूरों के मालिक एक कोश यानि एकाउंट बनाएं, जिसकी पूंजी से बाल–मजदूरों की आगे की शिक्षा और ट्रेनिंग जारी रह सके. बाल–मजदूरों की शिक्षा और ट्रेनिंग की प्रमुख जिम्मेदारी स्वंयसेवी संस्थाओं की हो.

डा बी आर पाटिल
सहायक प्रोफेसर

इंडियन इनस्टिट्यूट आफ मैनेजमेंट
बैंग्लौर

एक दिन एक नया लड़का काम करने आया. उसका नाम मुड्डा था. वो सिर्फ 6—साल का था.

मुड्डा के पिता ने बेटे के वेतन की बात भी की.

मुड्डा के लिए यह काम बहुत मुश्किल था. पहले ही दिन मुड्डा ने छिपने की कोशिश की पर कृष्णा ने उसे खोज निकाला.

मुड्डा बहुत घबरा गया.

शिवा ने उसे शांत किया और उससे दोस्ती की.

कृष्णा के दबाव में मुड्डा बड़े लड़कों जितनी तेजी से ही काम करने को मजबूर हुआ.

मुड्डा ने भरसक कोशिश की.

उससे जो बना, वो उसने किया.

थकने के कारण उससे

अक्सर दुर्घटनाएं होती थीं. फिर उसे और ज्यादा काम करना पड़ता था.

एक दिन उबलती चाय का भगोना मुड्डा पर गिर पड़ा. वो बुरी तरह जल गया.
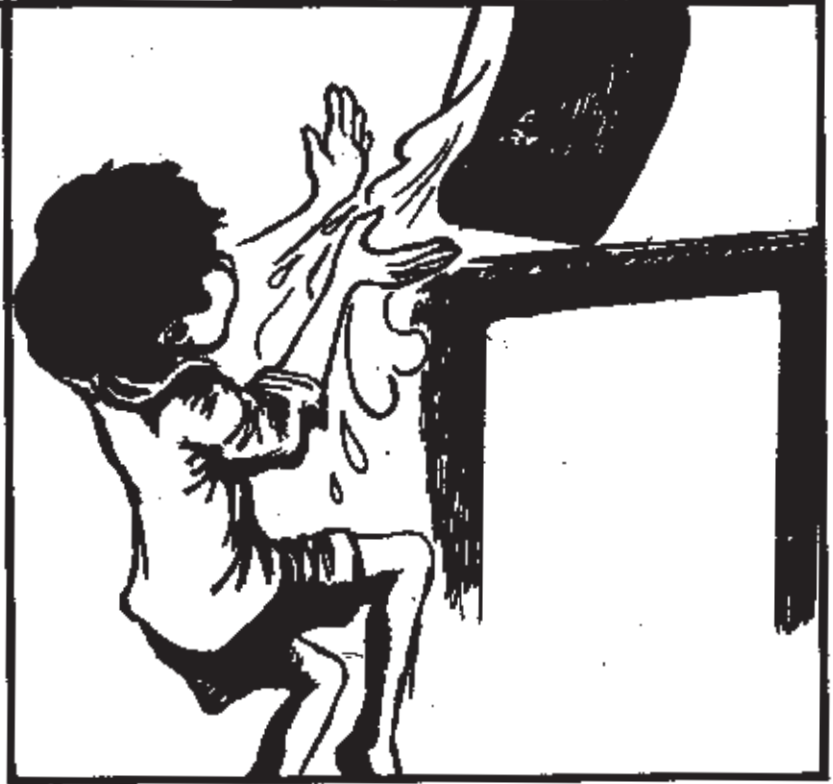
मुड्डा बहुत तकलीफ में था. उसे तुरंत डाक्टरी इलाज की जरूरत थी. पर किसी में भी कृष्णा से यह कहने की हिम्मत नहीं थी. दुर्घटना के बाद कृष्णा का पारा और चढ़ गया था. चाय गिरने से कृष्णा का कुछ नुकसान भी हुआ था. पर शिवा से नहीं रहा गया. उसने कृष्णा से मुड्डा को तुरंत डाक्टर के पास ले जाने को कहा.

मुड्डा को जल्दी डाक्टर के पास ले जाएं.
तुम अपना काम करो.
निकल जाओ बाहर, अभी!
अगर तुमने दुबारा इसका जिक्र किया तो मैं तुम्हारी जुबान खींच लूंगा! जाओ, जल्दी से मुड्डा को मेरे पास लाओ!
मुड्डा ने छिपने की कोशिश की.

बार–बार चीजें गिराकर तूने पहले ही मेरा बहुत नुकसान किया है.

यह खर्च तुझे ही भुगतना पड़ेगा. और डाक्टरी इलाज में जो खर्च आएगा वो भी तेरे बाप के कर्ज में जुड़ जाएगा!

बदमाशों! जरा मेरी तरफ देखो! याद रखो, इस होटल के अलावा तुम्हारा और कोई घर नहीं है. मैं तुम्हारा मालिक हूं और मैं अपनी मनमर्जी के मुताबिक तुम्हारे साथ बर्ताव करूंगा.

तभी बाहर भीड़ जमा होने लगी.

उसमें से दो लोग होटल के अंदर आए और उन्होंने झगड़े को निबटाया.

उन लोगों और कृष्णा के बीच कुछ बातचीत भी हुई.
तुम्हें मुड्डा को घर वापस भेजना चाहिए.
यह संभव नहीं है. मुड्डा का पिता उसके लिए राजी नहीं होगा.

मुड्डा के पिता को बुलाया गया.

बताओ मैं क्या करूं? मैंने कृष्णा से 400 रूपए का कर्ज लिया है. मेरे पास पैसों का और कोई जरिया नहीं है. मुड्डा को वहीं काम करते रहना चाहिए.

कृष्णा के अलावा मुड्डा के पिता को दूसरे लोगों का कर्ज भी चुकाना था.
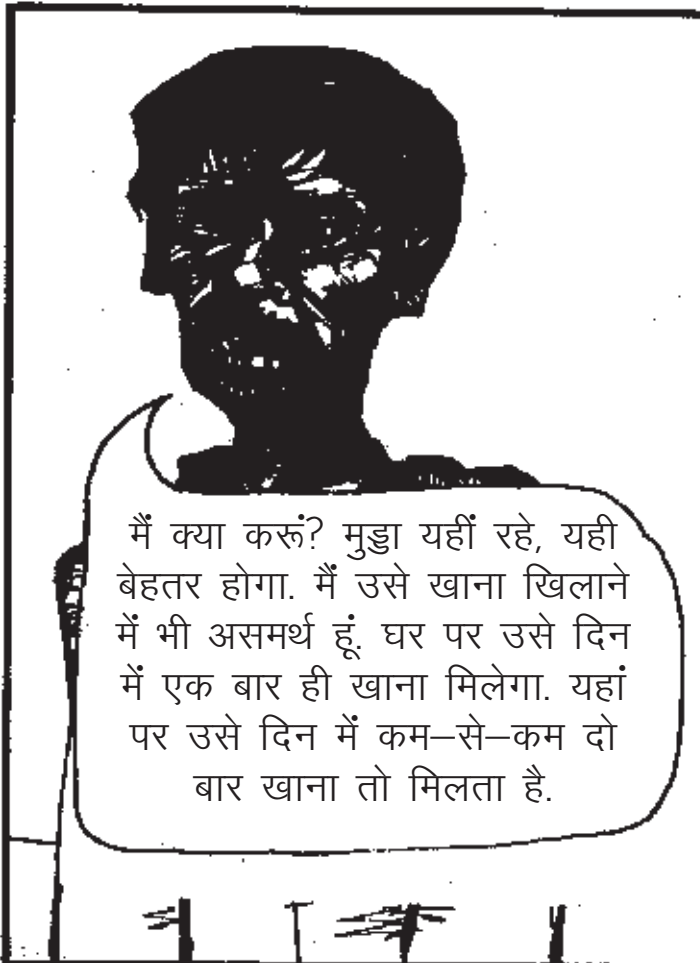
सूदखोर, कर्ज पर 40–प्रतिशत का ब्याज लेते थे. स्थिति बहुत दयनीय थी. उसका परिवार इतना कर्ज में डूबा था कि वो तीन पीढ़ियों में भी उसे नहीं चुका पाते. उनकी खुद की जिंदगी तक सूदखोरों के पास गिरवी रखी थी.

हम इसके बारे में कुछ कर सकते हैं. कानून के मुताबिक 14–साल से कम उम्र के बच्चों को नौकरी पर रखना और उनसे जबरन काम कराना एक जुर्म है. हम जरूर उसके लिए कोई और नौकरी खोजेंगे.
कोई दूसरी नौकरी?
पर हर जगह वही शोषण की स्थिति मौजूद है – कारखानों में, चाय दुकानों पर, मिकैनिक की वर्कशाप में, शहरों और गांवों में, सभी जगहों पर परिवार का कर्ज उतारने के लिए छोटे बच्चों को गुलामों की तरह काम करना पड़ता है. बच्चे बहुत कम पैसे कमाते हैं. और जिन परिस्थितियों में वे काम करते हैं वे यहां के हालात से भी गई–गुजरी होती हैं.
फिर कानून क्यों सोया है? और लेबर डिपार्टमेंट कुछ कुछ क्यों नहीं करता?
कानून? श्रम विभाग? क्या उन्होंने कभी कुछ किया है?
हां, वे लोगों को गिरफ्तार कर सकते हैं, पर क्या उससे समस्या हल होगी? अगर होटल बंद हो जाएगा तो मुड्डा और बाकी लड़कों को दो वक्त का खाना भी नहीं मिलेगा? उनके सिर से छत भी छिन जाएगी. लड़के अभी जहां हैं, वहीं बेहतर हैं.
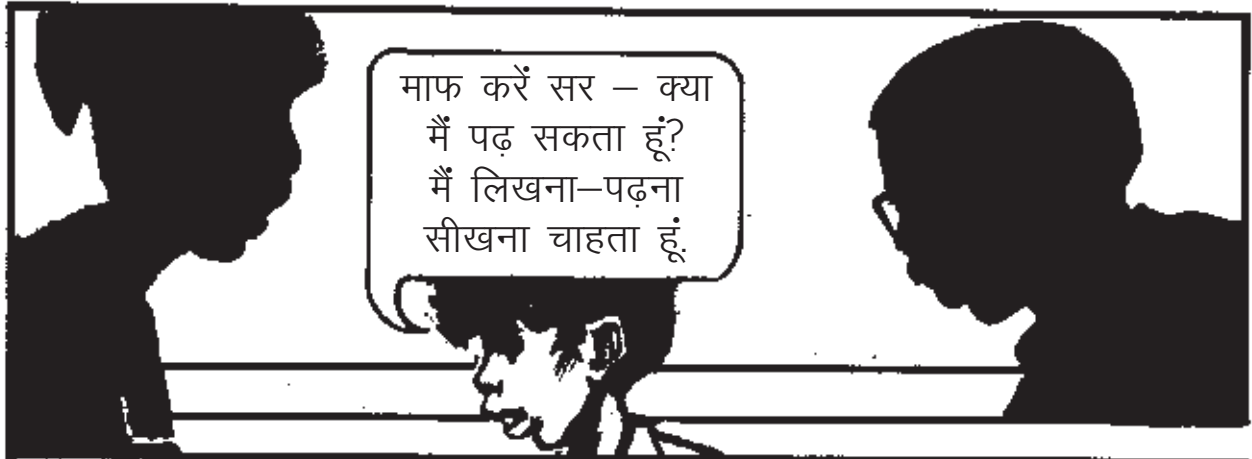
हम कृष्णा से बातचीत कर सकते हैं, पर शायद उससे कोई फायदा नहीं निकले. हमें कुछ अलग ही करना होगा. क्या इस इलाके में कोई रिटायर्ड टीचर रहता है? लड़के अलग–अलग समय पर पढ़ पाएं, हमें उसकी भी व्यवस्था करनी होगी.

लम्बी अवधि में शायद शिक्षा में ही इस समस्या का हल मिले. सही शिक्षा मिलने के बाद शायद यह बच्चे अपनी स्थिति का स्पष्टता से जायजा ले पाएं और खुद को अज्ञानता की बेड़ियों से मुक्त कर पाएं. परिवर्तन के लिए हमें खुद कुछ–न–कुछ करना ही पड़ेगा.

उचित वेतन, बेहतर काम के हालात, और पढ़ाई के लिए समय – इन चीजों की लड़कों को जरूरत है.

अच्छा अब हम चलते हैं. हां एक बात याद रखना. केवल तुम ही अपनी जिंदगी को बदल सकते हो. केवल तुममें ही वो ताकत है. इसमें हम तुम्हारी कुछ मदद जरूर कर सकते हैं.
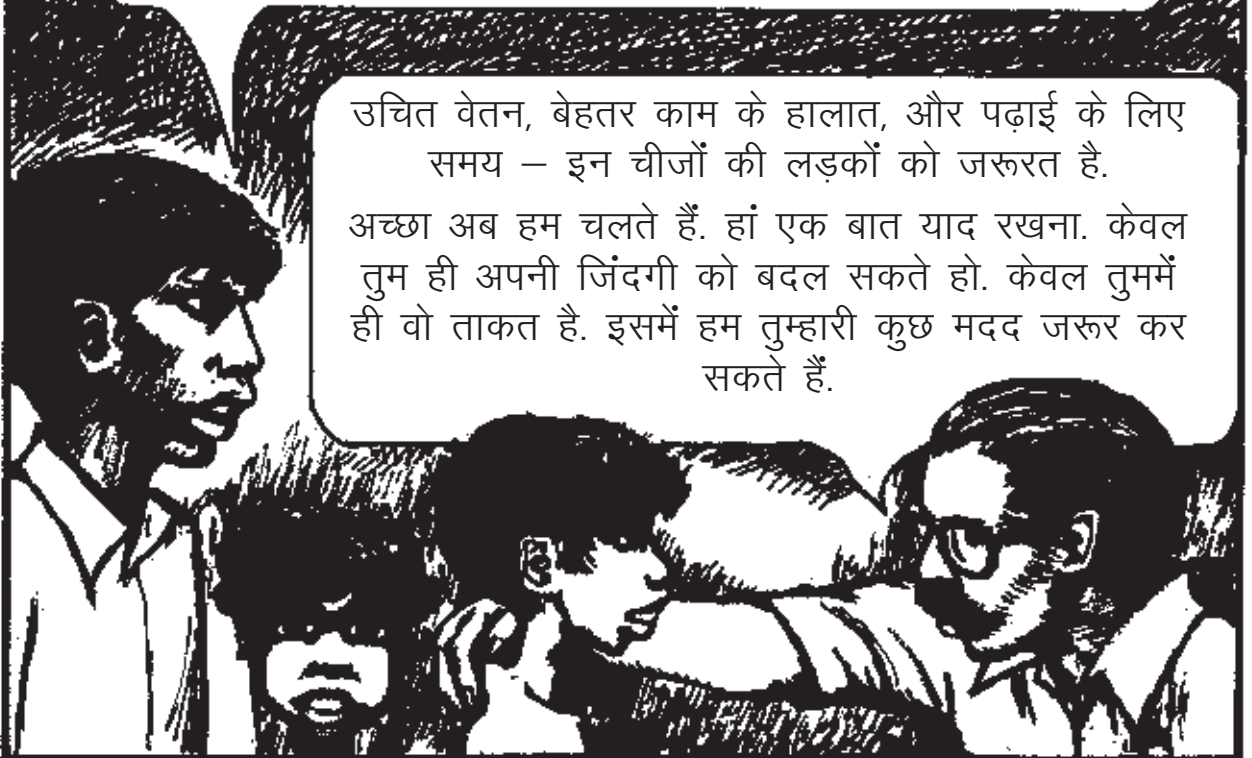
रोजना की तरह अगले दिन भी शिवा काम पर लग गया.

तब मुड्डा ने उसे एक अच्छी खबर सुनाई.

शिवा उनकी टेबिल पर गया.

हमें देखकर तुम्हें आश्चर्य क्यों हुआ? अब से हम यहां रोज दोपहर का खाना खाने आएंगे.
तभी कृष्णा ने चिल्लाकर लड़कों को अपने–अपने कामों पर वापस भेजा.
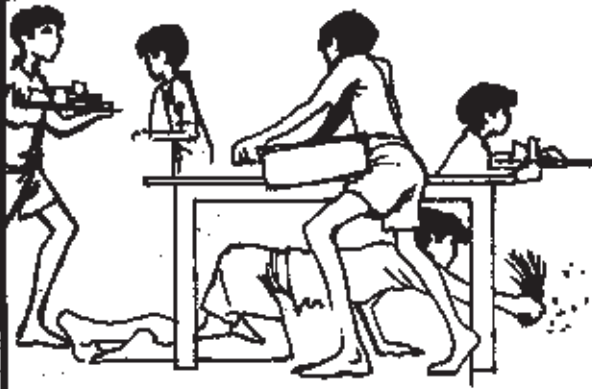
ताज्जुब! यह क्या हुआ? आज इन छोटे बदमाशों को कुछ हो गया है. मैंने इन दुष्टों को इतनी मेहनत से काम करते हुए पहले कभी नहीं देखा! शायद इन लोगों का लड़कों पर अच्छा प्रभाव पड़ा है. मैं इस मामले में फेल रहा. शायद इन लोगों से आगे बातचीत करके मेरा कुछ और फायदा हो?
कृष्णा ऐसी बातें सोचने लगा जिन्हें उसने पहले कभी नहीं सोचा था.

शिवा अपना काम करता रहा. पहले वो इस काम को बिल्कुल बेमनी से करता था. पर अब कुछ बदला था. इतनी लगन से उसने पहले कभी काम नहीं किया था. बाहर के कुछ लोग उसकी मदद करेंगे, इस बात से उसे बल मिला था. शायद उनकी सहायता और अपने प्रयासों से वो अपनी जिंदगी को बदल पाए? अब उसके सामने एक सपना था. भविष्य में उचित वेतन, काम की बेहतर परिस्थितियां और पढ़ाई के लिए समय – इससे उसके मन में उम्मीद जगी थी. अब भविष्य इतना अंधकारमय नहीं था, उसमें उम्मीद की किरण जगी थी.

. . . और यह महज सपना भर नहीं था. उसकी मदद करने वाले लोग होटल में खाना खा रहे थे. और शिवा और उसके साथी उन्हें खाना परोस रहे थे.

भविष्य को लेकर अब सभी लड़कों के दिलों में एक नई उमंग थी. खुद के संघर्षों और कुछ बाहरी लोगों की मदद से, शायद उनका सपना एक दिन असलियत में बदल सकता था.